I.G.N.O.U. Based

NEERAJ®

E.H.D.-5

आधुनिक भारतीय साहित्य : नवजागरण और राष्ट्रीय आंदोलन

By: *Hemant Kumar* M.A. (Hindi)

Question Bank Cum Chapterwise Reference Book
***Including* Many Solved Question Papers**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, Ist Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 240/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajignoubooks.com**
Website: **www.neerajignoubooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only | *Typesetting by:* Competent Computers | *Printed at:* Novelty Printer

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajignoubooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajignoubooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)
1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006
Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

CONTENTS

आधुनिक भारतीय साहित्य : नवजागरण और राष्ट्रीय आंदोलन

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1
Question Paper—December, 2017 (Solved)	1-7
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2016 (Solved)	1-5
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2015 (Solved)	1-6
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-5
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1
Question Paper—June, 2011 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2010 (Solved)	1

क्रम सं. अध्याय पृष्ठ

नवजागरण और राष्ट्रीय आंदोलन

1. आधुनिक युग की भूमिका 1
2. राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का विकास 4
3. नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना का विकास 9
4. भारतीय साहित्य में नवजागरण एवं राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति 13

पूर्वांचलीय साहित्य

5. बांगला साहित्य–I 19
6. बांगला साहित्य–II 25
7. बांगला साहित्य–III 29
8. असमिया साहित्य 33
9. ओड़िया साहित्य 39

क्रम सं.	अध्याय	पृष्ठ

दक्षिणांचलीय साहित्य–I

10. तमिल साहित्य–I 43
11. तमिल साहित्य–II 46
12. मलयालम साहित्य–I 48
13. मलयालम साहित्य–II 52

दक्षिणांचलीय साहित्य–II

14. तेलुगु साहित्य–I 55
15. तेलुगु साहित्य–II 58
16. कन्नड़ साहित्य–I 62
17. कन्नड़ साहित्य–II 64

पश्चिमांचलीय साहित्य

18. मराठी साहित्य–I 66
19. मराठी साहित्य–II 69
20. गुजराती साहित्य–I 73
21. गुजराती साहित्य–II 76

उत्तरांचलीय साहित्य

22. कश्मीरी साहित्य 80
23. सिन्धी साहित्य 84
24. पंजाबी साहित्य 87
25. उर्दू साहित्य–I 92
26. उर्दू साहित्य–II 97

क्रम सं.	अध्याय	पृष्ठ

हिंदी साहित्य–I

27. आधुनिक हिंदी साहित्य की युगीन पृष्ठभूमि 99
28. भारतेंदु हरिश्चन्द्र 104
29. मैथिलीशरण गुप्त 107
30. सियारामशरण गुप्त 110
31. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' 115
32. रामनरेश त्रिपाठी 118

हिंदी साहित्य–II

33. प्रेमचंद 122
34. जयशंकर प्रसाद 126
35. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 129
36. सुमित्रानंदन पंत 132
37. महादेवी वर्मा 135

हिंदी साहित्य–III

38. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' 138
39. माखनलाल चतुर्वेदी 142
40. रामधारी सिंह 'दिनकर' 147
41. राष्ट्रीयता के विकास में आधुनिक भारतीय साहित्य का योगदान 151

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

(June – 2019)

(Solved)

आधुनिक भारतीय साहित्य : नवजागरण और राष्ट्रीय आन्दोलन

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-4, 'राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का विकास'

प्रश्न 2. बांग्ला साहित्य में रवीन्द्र नाथ टैगोर के योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-25, 'परिचय', पृष्ठ-26, 'रवीन्द्र साहित्य', 'साहित्यिक विशेषताएं'

प्रश्न 3. सुब्रह्मण्यम भारती के काव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-44, 'सुब्रह्मण्यम भारती के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण के तत्व', 'सुब्रह्मण्यम भारती की कविता'

प्रश्न 4. नवजागरणकालीन मराठी साहित्य की सोदाहरण विशेषताएं बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-66, 'परिचय', 'अध्याय का विहंगावलोकन'

प्रश्न 5. आधुनिक सिन्धी साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-23, पृष्ठ-84, 'सिंधी साहित्य : उद्भव एवं विकास', पृष्ठ-85, 'सिंधी साहित्य की प्रमुख विशेषताएं'

प्रश्न 6. राष्ट्रीयता के विकास में आधुनिक भारतीय साहित्य के योगदान का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-41, पृष्ठ-151, 'अध्याय का विहंगावलोकन'

प्रश्न 7. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में व्यक्त राष्ट्रीयता की भावना का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-29, पृष्ठ-107, 'परिचय', 'मैथिलीशरण गुप्त की कविताएं', पृष्ठ-108, 'भारत भारती का विश्लेषण'

प्रश्न 8. छायावादी काव्य में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर–छायावादी कविता का काल सन 1920 से 1936 ई. तक माना जाता है। यह वह समय था जब देश में गांधीजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आन्दोलन चलाया जा रहा था और प्रत्येक देशवासी के हृदय में स्वतंत्रता एवं राष्ट्रीयता की भावनाएं विद्यमान थीं। प्रसाद जी ने अपने नाटकों–चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की तथा भारत के अतीत गौरव का गान किया। प्रसाद जी ने 'बीती विभावरी' में किसी नायिका को जगाने का ही प्रयास नहीं किया अपितु सम्पूर्ण देश को जाग्रत करने का प्रयत्न किया है। 'चन्द्रगुप्त' नाटक में राष्ट्रीयता अपने चरम शिखर पर है। कार्नेलिया भारत को अपना देश मानते हुए उसकी प्रशंसा इन शब्दों में करती है–

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।
सरस तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तरुशिखा मनोहर।
फैला जीवन हरियाली पर मंगल कुंकुम सारा।।
लघु सुरधुन से पंख पसारे शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुंह किए समझ नीड़ निज प्यारा।।

प्रसाद जी के काव्य संकलन 'लहर' में संकलित कविता **'पेशोला की प्रतिध्वनि'** राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत है। उदयपुर स्थित पिछोला (पेशोला) झील को देखकर महाराणा प्रताप की उस वीरभूमि मेवाड़ का स्मरण कवि ने किया है जो कभी वीरता, तेजस्विता एवं पराक्रम के लिए विख्यात थी। आज वह वीरता कहां चली गई? कवि प्रश्न करता है कि राणा प्रताप की गौरव गाथा का प्रतीक मेवाड़ तो वही है, किन्तु आज वह प्रतिध्वनि कहीं सुनाई नहीं पड़ती जो राणा प्रताप के समय में सर्वत्र गूंजी थी।

छायावादी कवियों में राष्ट्रीयता की सर्वाधिक प्रखर भावना निराला में दिखाई पड़ती है। **'जागो फिर एक बार'** कविता में निराला ने भार तीक उन चिर प्रसुप्त शक्तियों को जगाने का प्रयास किया है जो परतन्त्रता की गहरी नींद में सोई पड़ी हैं। वे

www.neerajbooks.com

कहते हैं ''आज तुम परतंत्र हो, दमित हो, किन्तु अतीत में तुम समर-सरताज रहे हो तुम्हारा यह दीन भाव नश्वर है, इसे त्याग दो''–

जागो फिर एक बार!
पशु नहीं वीर तुम समर शूर क्रूर नहीं
काल-चक्र में हो दबे आज तुम राजकुंवर,
समर सरताज।
तुम हो महान तुम सदा हो महान
है नश्वर यही दीन भाव
कायरता, कामपरता
ब्रह्म हो तुम
पव रज का भी है नहीं पूरा यह विश्व भान–
जागो फिर एक बार।

राष्ट्र-प्रेम के आजस्वी भावों से ओतप्रोत होकर कविवर निराला ने भारतमाता के उस साकार रूप की वन्दना की है जिसके पदतल में लंका शतदल (कमल) की भांति सुशोभित है और जिसके चरणों को सागर की उत्ताल लहरें धोती रहती हैं–

भारति जय विजय करे
कनक शस्य कलम धरे।
लंका पदतल शतदल
गर्जितोर्मि सागर जल
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु अर्थ भरे।

वाणी वन्दना में भी कविवर निराला ने भारत को स्वतंत्रता की गूंज से भर देने का आग्रह किया है। समस्त बन्धनों को काटने, कलुष एवं अन्धकार को हटाने तथा प्रकाश भर देने की प्रार्थना करते हुए राष्ट्रीय भावना को मुखरित किया है–

वर दे वीणावादिनि वर दे।
प्रिय स्वतंत्र रव अमृत मंत्र नव भारत में भर दे।
काट अन्ध उर के बन्धन स्तर बहा जननि
ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष भेद तमहर प्रकाश भर जगमग जग कर दे।।

भारत को विदेशी शासन से मुक्ति दिलाने के लिए निराला श्रम से संचित सम्पूर्ण फल चढ़ाने के लिए तत्पर हैं–

क्लेदयुक्त अपना तन दूंगा, मुक्त करूंगा तुझे अटल।
तेरे चरणों पर देकर बलि सकल श्रेय श्रम संचित फल।।

छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा भी राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत होकर अपने गीतों में राष्ट्र को उद्‌बोधन देती हुई कह उठती हैं–

चिर सजग आंखें उनीदीं
आज कैसा व्यक्त बाना।
जाग तुमको दूर जाना।।
अचल हिमगिरि के हृदय में
आज चाहे कम्प हो ले।
या प्रलय के आंसुओं में
शून्य अलसित व्योम रो ले
पर तुझे है नाश पथ पर
चिन्ह अपने छोड़ जाना।।

छायावादी कवियों द्वारा व्यक्त की गई ये अभिव्यक्तियां राष्ट्रीयता की भावना को जगाने वाली हैं तथा भारत के अतीत गौरव को अभिव्यक्त कर उसके सांस्कृतिक स्वरूप को व्यक्त करती हैं।

प्रश्न 9. दिनकर के काव्य की प्रमुख विशेषताएं बताइए।

उत्तर–रामधारी सिंह 'दिनकर' को भारतवर्ष के राष्ट्रकवि के रूप में जाना जाता है। दिनकर मूलत: राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना के कवि थे। उनकी रचनाओं में भारतीय पौराणिकता और आधुनिकता का अनोखा संगम दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से न सिर्फ स्वतंत्रता की कामना की, बल्कि राष्ट्र के नवनिर्माण में आजीवन संलग्न रहे।

आज भी दिनकर जी की रचनाओं का महत्त्व अक्षुण्ण ही नहीं, प्रासंगिक भी है। निम्नलिखित रचनाओं के रूप में दिनकरजी के प्रखर व्यक्तित्व और स्वस्थ चेतना का प्रतिफलन हुआ–

काव्य–दिनकर के प्रथम तीन काव्य संग्रह 'रेणुका' (1935 ई.), 'हुँकार' (1938 ई.) और 'रसवंती' (1939 ई.) उनके आरंभिक आत्ममंथन के युग की रचनाएँ हैं। 'सामधेनी' (1947 ई.) में कवि की व्यापक सामाजिक चेतना अभिव्यक्त हुई है। 'नील कुसुम' (1955 ई.) नामक कृति में कवि दिनकर के प्रयोगवादी विचार को स्थान मिला है।

मुक्तक काव्य संग्रहों के अतिरिक्त कवि दिनकर ने अनेक प्रबंध काव्यों की भी रचना की है, जिसमें 'कुरुक्षेत्र' (1946), 'रश्मिरथी' (1952 ई.) और 'उर्वशी' (1961) प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त 'द्वन्द्वगीत', 'हुंकार', 'बापू', 'दिल्ली', 'हारे को हरिनाम' भी कवि दिनकरजी की श्रेष्ठ रचनाएँ हैं।

हिंदी राष्ट्रीय भावधारा की रचनाओं में दिनकर एक ओजस्वी सामाजिक चेतना लेकर प्रकट होते हैं। दिनकर के वैचारिक द्वन्द्व के भीतर अतीत और वर्तमान की टकराहट हुई। भारत के समृद्ध अतीत का गुणगान करते-करते कवि वर्तमान जीवन के दैन्य और दु:ख-संताप का भावानुकूल चित्रण करने लगता है। इस क्रांतिदर्शिता के कारण ही 'दिनकर' को आधुनिक चेतना का कवि कहा गया है। पौरुष और ओज के वे गायक हैं। उनकी रचनाओं का बहुत बड़ा पक्ष राष्ट्रीय भावों से संबद्ध है, जिसमें विश्व और मानव के कल्याण की कामना प्रकट हुई है।

राष्ट्रीय चेतना–दिनकर के वैचारिक बोध में संपूर्ण राष्ट्र अनुगुंजित होता दिखाई देता है। वे प्राकृतिक तत्त्वों में भी राष्ट्र

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

आधुनिक भारतीय साहित्य : नवजागरण और राष्ट्रीय आंदोलन

नवजागरण और राष्ट्रीय आंदोलन

आधुनिक युग की भूमिका

1

परिचय

आधुनिकता एक वैज्ञानिक एवं तार्किक अभिलक्षण है, जो चेतना के रूप में इतिहास परिवर्तन की क्षमता रखता है। भारतीय इतिहास में आधुनिक युग का आरम्भ साहित्य, समाज, कला, संस्कृति आदि क्षेत्रों में 1857 ई. के आस-पास माना जाता है, किंतु यह आधुनिक युग की सीमा-रेखा न होकर आरम्भ के रूप में प्रवृत्ति बहुल काल रहा है, जिसमें आधुनिक तत्त्वों का क्रमशः समावेश हुआ है। अतः भारतीय परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता, नवजागरण एवं राष्ट्रीयता के साथ पल्लवित हुआ है।

अध्याय का विहंगावलोकन

आधुनिक युग का महत्त्व

आधुनिक युग का भारतीय इतिहास में युगपरिवर्तनकारी महत्त्व रहा है। परंपरागत जटिल कर्मकांडों एवं क्षेत्रीयता की भावना से ग्रसित भारतीय समाज को नवचेतना से युक्त एवं राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोने का समग्र कार्य आधुनिक युग में सम्पन्न हुआ है। इस प्रकार आधुनिकता को भारतीय सामाजिक उत्थान के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ यह राजनीतिक सुदृढ़ता एवं सांस्कृतिक अस्मिता को भी मुख्य धारा में लाता है।

आधुनिक युग का सीमांकन–आधुनिकता एक चेतना है जो इतिहास, समाज, संस्कृति और कला-साहित्य पर भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होती है। आधुनिकता की अनिवार्य शर्त है–स्वचेतना। यह स्वचेतना ही है जो समाज और साहित्य को नए ढंग से देखने की दृष्टि प्रदान करती है। एब्रामस ने लिखा है कि "आधुनिक शब्द का अर्थ सामान्यतः विभिन्न संदर्भों में परिवर्तनीय है।" वस्तुतः यूरोप में यह शब्द बीसवीं सदी के प्रारम्भ में धर्म को विज्ञान के आलोक में देखने के लिए प्रयोग हुआ। किंतु आधुनिकता के तत्त्वों को हम फ्रांस की महान राज्य-क्रांति के सिद्धांतों, स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व में देख सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आधुनिकता एक जटिल प्रत्यय है जो मानवीयता एवं बंधुत्व के रूप में 15वीं सदी के आरम्भ में यूरोप में धार्मिक सुधार आंदोलन से आरम्भ हुई। तत्पश्चात् ज्ञान-विज्ञान की युगांतकारी खोजों ने इसमें अनेक सुधारवादी आवश्यकताओं को संलग्न किया। भारतवर्ष में अंग्रेजी हुकूमत के दौरान यहाँ पल रही पुरानी रूढ़ियाँ एवं परंपराएँ टूटीं तथा अंधविश्वास के स्थान पर तर्कपूर्ण विश्लेषण ने समाज को एक नई राह दिखाई। आगे इस प्रत्यय में नवजागरण, राष्ट्रीयता, अस्तित्ववाद आदि जुड़ते चले गए। मोटे तौर पर 1857 ई. से भारत में आधुनिक युग का आरंभ माना जा सकता है, जिसे आज प्रत्येक क्षेत्र में रचा-बसा देखा जा सकता है।

आधुनिक युग की विशिष्टता–आधुनिक युग की सबसे बड़ी विशेषता मानव-सत्य को पहचानना है। अर्थात जहाँ मध्यकाल में जीवन की सार्थकता धर्म और दर्शन की नींव पर टिकी थी, वहीं आधुनिक युग में भोगे हुए यथार्थ, अर्थ तथा राजनीति को मानव जीवन के संदर्भ में विश्लेषित किया गया। साथ ही डार्विन के विकासवादी सिद्धांत, फ्रायड का मनोविज्ञान तथा मार्क्स के दर्शन ने युगांतरकारी विचार प्रस्तुत किए। कुल मिलाकर आधुनिक युग ने समाज के अंधकार को तर्क की कसौटी पर वैज्ञानिक रूप में मानव को स्वर्णिम प्रकाश की ओर अग्रसर किया, जिसके फलस्वरूप अस्तित्ववाद, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श आदि हाशिए पर पड़ी चीजों को मुख्य बिंदु बनाया गया।

आधुनिक साहित्य की मूल संवेदना–साहित्येतिहास का आधुनिक काल वास्तव में नवजागरण से आरंभ होकर राष्ट्रीयता के साथ आधुनिकता के तत्त्वों से प्राणित रहा है। 'साहित्य समाज का दर्पण होता है' अतः आधुनिक काल की सबसे बड़ी चिंता मानव की प्रतिष्ठा रही है, जो अपने विस्तृत रूप में राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं

www.neerajbooks.com

को लाँघ, सार्वभौमिक कल्याण तक पहुँच जाती है। फिर भी हिंदी में आधुनिक काल में लिखे साहित्य की मूल संवेदनाएँ, मूल्यहीनता, तत्कालिकता, व्यवस्था विरोध, संशय, वैयक्तिकता, सत्य के बजाय ईमानादारी, यथार्थ एवं गतिशील मानव चेतना, निष्पक्षता, मोहभंग आदि रही हैं। इस काल में साहित्यिक संवेदनाओं का क्रमिक विकास हुआ है। भारतेंदु, महावीरप्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद, निराला, पंत, प्रेमचंद, नागार्जुन, अज्ञेय, मुक्तिबोध आदि की रचनाओं में इस क्रम का अवलोकन किया जा सकता है।

आधुनिक युग : राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक संदर्भ

आधुनिकता का प्रवेश समाज के सभी क्षेत्रों में हुआ है। इस चिंतन ने व्यक्ति की राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक क्रियाकलापों को प्रभावित किया है।

आधुनिक युग : राजनीतिक संदर्भ–भारत के संदर्भ में आधुनिकता का प्रवेश पराधीन भारत से आरंभ होता है, जहाँ एक प्रगतिशील एवं नवीन विचारों से युक्त राजनीतिक मंच को उपस्थित कर भारतीय नेताओं ने देशभक्ति की भावना का प्रसार कर स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना इस दिशा में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस आदि नेताओं ने वैश्विक राजनीतिक परिवर्तनों को ध्यान में रखकर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की रूपरेखा तैयार की तथा आधुनिकता के मूल्यों से सिंचित लोकतंत्र की स्थापना को बल दिया और आधुनिक भारत के निर्माण में भूमिका निभाई।

आधुनिक युग : सांस्कृतिक संदर्भ–भारतीय संस्कृति एक समेकित संस्कृति रही है, जिसमें नाना संस्कृतियों का मेल है। आधुनिक युग की एक विशिष्टता सांस्कृतिक अस्मिता का प्रश्न भी रहा है। भारत की स्वाधीन चेतना में विद्वानों ने संस्कृति को महत्त्व प्रदान किया है। अंग्रेजी शासन ने भारतीयों को हतोत्साहित करने का अत्यंत प्रयास किया। अत: सांस्कृतिक ओजस्विता की स्थापना ने गर्व को जन्म दिया तथा इसी आधार पर एकता स्थापित कर आधुनिक संकल्पना के रूप में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। अर्थात् राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, ईश्वरचंद विद्यासागर, गोपाल हरिदेशमुख आदि आधुनिक धर्म-समाज-सुधारकों ने भारतीय सांस्कृतिक छवि को स्वच्छ रूप में प्रस्तुत किया। धर्म की पुनर्व्याख्या कर, अंधविश्वास, कर्मकांड, मूर्तिपूजा आदि का विरोध एवं उनका संशोधन करके उनका वैज्ञानिक एवं तार्किक रूप में प्रस्तुतिकरण किया। साहित्य में अनेक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भी इसका प्रसार हुआ तो जयशंकर प्रसाद ने इतिहास के पन्नों से भारतीय जातीय संस्कृति को चुनकर यशोगान किया है। आधुनिक युग में सांस्कृतिक मूल्यों को नवीन रूप में ओजस्वी एवं आधुनिकता से लैस बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई।

आधुनिक युग : साहित्यिक संदर्भ–नवीन परिस्थितियों एवं परिवेश के कारण साहित्य, संगीत और कला में भी संक्रमण का दौर आया। इस दौर ने बंगला साहित्य को सर्वप्रथम प्रभावित किया। (पं. रामचन्द्र शुक्ल)। साथ ही महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से इस चेतना को प्रसारित किया। साहित्य में राष्ट्रीय चेतना एवं अतीत के गौरवमय क्षणों को सहेजा गया। आधुनिक काल का अधिकांश साहित्य अपने को पहचानने तथा पाश्चात्य बंधनों से छुटकारा पाने का इतिहास है। अतीत के गौरव को इस देश की सभी भाषाओं में अभिव्यक्त किया गया। इस गौरव के मूल में पुनरुत्थानवाद (रिवाइवलिज्म) न होकर नवीन जागरण ही क्रियाशील था। स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात यह स्वर आत्मालोचन में बदल गया तथा 1960 के बाद साहित्य में आधुनिकता ने दिशा परिवर्तन का कार्य किया है।

प्रेस की स्थापना–नयी अर्थव्यवस्था और नवीन शिक्षा पद्धति के कारण भारतीय जनता में एक ऐसी चेतना उत्पन्न हुई जिसके आधार पर लोग अपनी कठिनाइयों को समझने और उनको दूर करने की कोशिश करने लगे। इसके लिए प्रेस से बेहतर और कोई साधन नहीं हो सकता था। अत: आधुनिक विचारों के प्रसार-प्रचार में प्रेस की भूमिका निर्विवाद है। 1674 में ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा बम्बई में मुद्रण कार्य आरम्भ किया गया था, वैसे प्रेस की स्थापना पुर्तगालियों ने की थी।

आधुनिक युग का साहित्य : आंदोलन और शैलियाँ–आधुनिक भारतीय साहित्य में नाना प्रवृत्तियों एवं शैलियों की बाढ़-सी आ गई। यह युग साहित्यिक क्षेत्र में क्रमिक रूप से विकासोन्मुख रहा है। आरंभ में स्वाधीनता का बिगुल फूँकने वाले साहित्यकारों ने जीवन के सत्य का संघर्ष के रूप में वर्णन किया है। इस काल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि गद्य का विकास रहा है। गद्य में आधुनिक विचारों की सीधी अभिव्यक्ति की क्षमता होती है। हालाँकि इस गद्य के अनेक रूप आधुनिक विचारों को प्रतिबिम्बित करने के लिए विकसित हुए। जैसे–कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, रेखाचित्र, निबंध, आलोचना, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज आदि। ये परस्पर भिन्न-भिन्न शैलियों में लिखे जाते हैं।

आधुनिक युग की मूल संवेदना

भारतीय चेतना में पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ने की उत्कंठा के साथ एकता की अनुगूंज उठने लगी थी। अंधविश्वास एवं रूढ़ियों का तार्किक ढंग से खंडन कर जागरूकता का फैलना ही आधुनिक युग की मूल संवेदना रही है।

राष्ट्रीय स्वाधीन चेतना–राष्ट्रीयता की भावना का प्रसार और स्वाधीनता की छटपटाहट 1857 से ही देखने को मिल जाती है। भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने विदेशी साम्राज्यवादी शोषक अंग्रेजों की पोल खोलने का काम किया है। अन्य साहित्यकारों ने भी देशभक्ति एवं अतीत के गौरवपूर्ण इतिहास को खंगालकर एक नवीन ऊर्जा का संचार किया। गांधीवादी आंदोलन ने स्वाधीनता की इस साहित्यिक लड़ाई को एक सुनिश्चित दिशा प्रदान की। इस प्रकार आधुनिक काल में देश में स्वतंत्रता की भावना का संचार किसी एक कारण विशेष से नहीं हुआ, बल्कि यह राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के कारण उत्पन्न हुआ है। इस क्षेत्र में अनेक स्वयंसेवी संस्थाओं का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

नवजागरण–19वीं शताबदी में धार्मिक अंधविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध मोर्चा खोला गया तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति में जो कुछ उत्तम और ग्रहणीय था, उसकी नवीन व्याख्या कर उसे आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुनर्स्थापित किया गया। नवजागरण अथवा पुनर्जागरण की चेतना का ब्रिटिश राज्य की स्थापना के कारण भारत की अर्थ-नीति, शिक्षा पद्धति, यातायात के साधनों आदि में बुनियादी परिवर्तन होने के फलस्वरूप आरंभ होता है। आधुनिक युग में ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज और आर्य समाज ने पुराने धर्म को नए समाज के अनुरूप ढालने का प्रयास किया। इस प्रकार सती-प्रथा का

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अंत विधवा पुनर्विवाह, बाल-विवाह निषेध आदि प्रगतिशील विचारों को व्यावहारिक रूप मिला। आधुनिक भारत की नींव का पहला पत्थर राजा राममोहन राय ने रखा तो साहित्य की सर्वाधिक चिंता इनके अनुसरण में थी। यहीं भारतेंदु आदि साहित्यवेत्ताओं ने आर्थिक शोषण के विरुद्ध आवाज उठाकर नवजागरण की नवीन चिंतन का बिगुल फूँका।

मूल्यांकन

आधुनिक युग का अवदान–अंग्रेजों से भारतीयों के संपर्क से नए विचारों एवं ज्ञान-विज्ञान के आधुनिक रूपों से परिचय हुआ। यह एक चौतरफा विकास था, जहाँ अंग्रेजी शिक्षा, औद्योगिक क्रांति, प्रेस और पत्रकारिता का विकास आदि से नवीन चेतना का त्वरण हुआ। इन सम्मिलित कारकों ने राष्ट्रीय चेतना एवं स्वाधीन चेतना को स्फुरण दिया तथा एक अंधकार युग की समाप्ति हुई। इस युग में स्वस्थ और प्रगतिशील परंपराओं को बल मिला। सर्वप्रथम इंसानी बराबरी की बात की गई अैर स्त्रियों की अशिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, छुआछूत, जाति-पांति के भेदभाव से ऊपर उठकर देखने का प्रयास किया गया। इस कार्य में एक ओर राजा राममोहन राय ने प्रयास किया, तो दूसरी तरफ भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने किया। आधुनिक युग के अवदानों में खड़ी बोली हिंदी का विकास एवं गद्य का स्वरूप निर्धारण महत्त्वपूर्ण है।

आधुनिक युग के संदर्भ में भारतीय साहित्य की पहचान–आधुनिकता ने समाज सुधारकों को ही नहीं वरन् साहित्यकारों की भी दिशा का निर्धारण किया। भारतीय साहित्य में बंगला, तमिल, तेलुगू आदि सभी भाषाओं के साहित्य में आधुनिक जीवन मूल्यों का समावेश हुआ और देशभक्ति एवं स्वतंत्रता की भावना के साथ आत्मचेतना को प्रश्रय मिला। हिंदी साहित्य में छायावाद के समकक्ष राष्ट्रीय स्वाधीन आंदोलन द्रष्टव्य है।

बोध-प्रश्न

प्रश्न–19वीं सदी के नवजागरण में हिंदुत्व के आग्रह मुख्यतः दो प्रकार के थे। उनमें मुख्य अंतर बताइए।

उत्तर–नवजागरण के आलोक में इतिहास की पुनर्व्याख्या का जब प्रश्न उठता है तो उसमें वैदिक मूल्यों की पुनर्स्थापना भी शामिल होती है। जहाँ एक ओर राजा राममोहन राय भारतीय और पाश्चात्य विचारों की संगमस्थली हैं तो विवेकानंद आदि आर्य समाज के माध्यम से शुद्धिकरण आदि की प्रक्रिया से पुनरुत्थानवादी रूप में उपस्थित होते हैं।

स्वपरख-अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में आधुनिक युग की विशिष्टताएँ क्या हैं? संक्षेप में बताइए।

उत्तर–भारत की परिस्थितियों ने आधुनिकता को राष्ट्रीयता एवं स्वाधीन चेतना से परिपूर्ण किया। देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ एक उपनिवेश था, जिसे धार्मिक कर्मकांडों, अंधविश्वासों और समाजिक भेदभाव ने खोखला बना दिया था। अतः इन परिस्थितियों में ही भारत में नवजागण के माध्यम से आधुनिक भावबोध की शुरुआत होती है। नवजागरण परंपरा और संस्कृति को वैज्ञानिक तर्क-विधान और सामाजिक-राजनीतिक अभिप्रायों से जोड़ने वाली चेतना है। अतः भारतीय नवजागरण में इतिहास की पुनर्व्याख्या का प्रश्न, अस्मिता की खोज, परंपरा के अंधकार पक्ष से मुठभेड़, विसंगतियों की पहचान आदि भारतीय जनचेतना के अनुरूप उत्पन्न हुआ।

प्रश्न 2. राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को किन विचारकों और विचारधाराओं ने प्रभावित किया?

उत्तर–19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में राष्ट्रीय राजनीतिक चेतना बहुत तेजी से विकसित हुई और भारत में एक संगठित राष्ट्रीय आंदोलन का आरम्भ हुआ। इस चेतना के अग्रणी राजा राममोहन राय (ब्रह्म समाज), दयानंद सरस्वती (आर्य समाज), दादाभाई नौरोजी, स्वामी विवेकानंद, बालगंगाधर तिलक आदि रहे हैं। तत्पश्चात भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ने इस मुक्ति आंदोलन के लिए लम्बा और साहसपूर्ण संघर्ष चलाया और अंत में 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हुआ। राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष में देशी विचारधाराओं के साथ-साथ विदेशी विचारों–रूसी क्रांति, फ्रांस की क्रांति, लेनिनवाद, मार्क्सवाद आदि के साथ देशी विचार गांधीवाद का महत्त्वपूर्ण प्रभाव रहा है।

प्रश्न 3. प्रेस के उदय ने साहित्य पर क्या प्रभाव डाला?

उत्तर–प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना ने पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन में जान फूँक दी। लेखकों की रचनाओं की अनेक प्रतिलिपियाँ कम समय में ही बनाई जा सकती थीं। कुल मिलाकर यदि नवीन विचारों को जनता में फैलाने का काम किया तो वह प्रेस ने ही। 18वीं शताब्दी में मद्रास, कलकता, हुगली, बम्बई आदि स्थानों में छापेखाने स्थापित हुए। इस तरह से समाचार-पत्रों के माध्यम से अर्थात् राजा राममोहन राय ने 'संवाद-कौमुदी' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'हरश्चिन्द मैगजीन' आदि के माध्यम से जनसामान्य को संबोधित किया। प्रिंटिंग एवं मुद्रण प्रणाली ने अनुवाद के लिए भी सुविधा मुहैया करायी। अतः भारतीय साहित्य को त्वरण प्राप्त हुआ तथा जनता के लिए पठनीय हो पाया।

प्रश्न 4. राष्ट्रीय स्वाधीनता की चेतना का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–स्वाधीनता एक मानवीयता से परिपूर्ण चेतना है। यह मनुष्य का जन्मजात अधिकार है। प्रकृति के अनुरूप प्रत्येक मनुष्य को स्वतंत्रता एवं समानता प्राप्त है। मानव की लोलुपता एवं शासन करने के दंभ ने भेदभाव को जन्म दिया। अतः स्वाधीनता का ही राष्ट्रीयकरण कर, स्वतंत्रता प्राप्ति का प्रयास किया जाता है। भारतीय चिंताधारा में राष्ट्रीय स्वाधीनता का तात्पर्य सामूहिक स्वाधीनता एवं सांस्कृतिक स्वाधीनता है, जिसका साहित्य में बड़ी सफाई से छायावादी युग में वर्णन मिलता है।

प्रश्न 5. आधुनिक युग का प्रमुख अवदान बताइए।

उत्तर–आधुनिक विचारों एवं मूल्यों ने पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान की छाया में पोषण हुआ। फ्रांस की राज्य-क्रांति से समानता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व जैसे आदर्शों का विश्व में प्रसार हुआ। इस प्रकार नए मूल्यों का निर्माण, रूढ़ियों की पहचान एवं उनका विरोध, कर्म को महत्त्व, मानवीय मूल्यों की स्थापना, मनुष्य की प्रतिष्ठा, विश्वबंधुत्व, महामानव की संकल्पना का निषेध आदि विचारों ने युग में नया मोड़ ला दिया, साथ ही विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास ने सभी विचारों में त्वरण का कार्य किया।

■■

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का विकास

2

परिचय

भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन भारतीय जनमानस की स्वाभाविक प्रतिक्रिया रही है, जो साम्राज्यवादी एवं औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध राष्ट्रीय स्वाधीनता के रूप में प्रतिफलित होती है। यह आंदोलन क्रमवार रूप में सामने आता है जो आरंभ तो 1857 से होता है किंतु 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद यह सुसंगठित विचारधारा के रूप में सामने आता है। अत: इसके विभिन्न चरण हैं–प्रथम चरण (1885-1905), जिसे उदारवादी राजनीति अथवा राजनीतिक भिक्षावृत्ति का युग भी कहते हैं; द्वितीय चरण (1905-1919), उग्रवादियों का उदय अथवा अतिवादी राजनीति तथा तृतीय चरण (1919-1947) गाँधी का युग कहते हैं। इन्हीं चरणों का विश्लेषण प्रस्तुत पाठ में किया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

स्वाधीनता आंदोलन की पृष्ठभूमि

किसी भी आंदोलन के आरम्भ होने में उसकी पृष्ठभूमि का महत्त्व होता है। भारतीय अर्थव्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने वाली औपनिवेशिक शासन ने राजनीतिक व्यवस्था को भी अपने हाथों में ले, दमनचक्र का ऐसा तांडव किया कि भारतीय जनता की धैर्य की सीमा समाप्त हो गई। अत: राष्ट्रवाद के उदय के पहले की परिस्थितियों का वर्णन आवश्यक है।

आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद से पहले–मुगल साम्राज्य का पतन औरंगजेब के पश्चात् ही आरंभ हो चुका था। राजतंत्र के स्थायित्व के लिए सैन्यतंत्र के साथ-साथ राजा का योग्य होना अत्यावश्यक होता है। औरंगजेब के पश्चात् 1712 में बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात् कोई भी शक्तिशाली व योग्य शासक न रहा। विभिन्न प्रांतों ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। अंग्रेजों ने भी अपने व्यापारिक रूप का त्याग कर शासक बनने की कोशिश प्रारंभ कर दी और 1757 की प्लासी की लड़ाई तथा 1764 के बक्सर के युद्ध ने भारतीय साम्राज्य में अंग्रेजों को पर्याप्त जगह दे दी। धीरे-धीरे ब्रिटिश कम्पनी ने पूरे भारतवर्ष पर अपना कब्जा जमा लिया। उन्होंने देश के आर्थिक ढाँचे को ध्वस्त कर दिया। ऐसे समय में एक राष्ट्रीय समस्या का आविर्भाव हुआ जो भारत की राष्ट्रीय समस्या थी और इसका प्रथम सम्मिलित प्रतिरोध 1857 में दिखता है।

आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का उदय–1857 ई. का संघर्ष का कोई एकीकृत साझा उद्देश्य नहीं था। यहाँ स्वतंत्रता संग्राम हेतु जिन तत्त्वों की उपस्थिति अनिवार्य होती है, वे नहीं थीं, क्योंकि यहाँ पर क्षेत्रीय राष्ट्रवाद एवं क्षेत्रीय स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति थी। अत: आधुनिक राष्ट्रवाद 1857 से भले ही न दिखता हो, किन्तु एक साझा उद्देश्य जरूर दिखता है। अंग्रेजी साम्राज्य के शोषक चरित्र ने धीरे-धीरे इन्हीं साझी समस्याओं को सम्मिलित किया और एक राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। चाहे कोई सामंत हो, चाहे उद्योगपति, चाहे कर्मचारी या कारीगर अथवा किसान, सभी का अंग्रेजों ने आर्थिक शोषण किया। अत: आधुनिक राष्ट्रवाद की संकल्पना "पै धन विदेश चली जात" से उत्पन्न होती है जिसे विवेकानंद आदि विचारकों एवं आगे गांधी जी के प्रयासों ने संयुक्त किया।

राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का विकास

राष्ट्रीय चेतना के उद्भव ने स्वाधीन चेतना को बल दिया। एक साझे उद्देश्य के रूप में पराधीन भारत की स्वतंत्रता का प्रश्न सर्वोपरि था। ऐसी स्थिति में नवीन विचारों ने व्यक्ति की स्वाधीनता से राष्ट्र की स्वाधीनता की ओर सम्मिलित किया। अब यह आंदोलन अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध रूख उठ खड़ा हुआ।

पहला चरण 1857 से 1905 तक–इस चरण को उदारवादी राजनीति अथवा राजनीतिक भिक्षावृत्ति भी कहते हैं। इसे नरम राष्ट्रीयता का युग भी कहा जाता है। इसके नेता ब्रिटिश सम्राट के प्रति निष्ठा और आज्ञाकारिता की भावना को प्रकट करते थे। इस चरण में दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, दीनशा वाचा, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी आदि थे। ये लोग अपनी राजनीति की व्यवाख्या उदारवाद और संयम के समन्वय से करते थे। 1866 में लंदन में ईस्ट इंडिया एसोसिएशन, 1877 में पूना सार्वजनिक सभा, 1878 में लाइसेंस कर एवं 1879 में सूती कपड़ों पर आयात कर हटाने के लिए विरोध प्रकट किया गया। कांग्रेस पूर्व राष्ट्रवादी संगठनों में सबसे महत्त्वपूर्ण कलकता में स्थापित इंडियन एसोसिएशन थी। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी तथा आनंदमोहन बोस ने 1876 में इसकी नींव रखी। जस्टिस रानाडे ने सार्वजनिक सभा की स्थापना 1870 में की। इस प्रकार जो राष्ट्रवादी एक साझे शत्रु अर्थात विदेशी शासन और शोषण के खिलाफ राजनीतिक एकता की आवश्यकता महसूस कर रहे थे, उन्हें 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के रूप में वह मंच मिल गया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना–भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना भारतीय आंदोलनों को एक प्लेटफॉर्म के रूप में मिला।

www.neerajbooks.com